आपातकाल
में
सृजन फुलवारी

भावना विशाल

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

भावना विशाल

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-119-0
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, भावना विशाल
मूल्य - 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY BHAVNA VISHAL
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सब्र कर	6
2.	जला हुआ शहर	7
3.	देखो,सुबह आ रही है	8
4.	मनुहार	9
5.	भूख	10
6.	घर	11
7.	स्मृतियाँ	12
8.	किस्मत	13
9.	मुहब्बत	14
10.	एक आंसू बोल पड़ा	15
11.	तेरी वजह से!	16
12.	कौन हो तुम?	17
13.	पथिक	18
14.	ये भोली लड़कियाँ	19
15.	हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!	20-21

सब्र कर

नींद रात भर
अन्न पेट भर
हो तो रही है गुजर
सब्र कर, अब सब्र कर।

अंधी दौड़ न कर
बेमतलब होड़ न कर
मना दाता का शुकर
सब्र कर, अब सब्र कर।

भटकते भटकते यहां तक
न जाने आ गये कहां तक
आ अब चलें लौटकर
सब्र कर, अब सब्र कर।

जला हुआ शहर

मैं तेरे शहर से
आज भी
तन्हा लौटी हूं
तंग गलियों,
कसे हुए दरवाजों
और बंद खिड़कियों से
आज भी
उम्मीद की इक
छोटी सी झलक भी
लाहासिल ही रही मुझे
प्यासे गले,
धुएं में घुटती आवाजों से
मैंने हर दर पुकारा
रसूल औ' ईमान लेकिन
कोई पुकार न लौटी
वापिस मुझ तक
शायद बदनीयती
बदगुमानी में
जल चुका है
तेरी रूह का
आखिरी कतरा-कतरा भी।

देखो, सुबह आ रही है

सज धज कर रश्मियाँ,
कैसे खिलखिला रही हैं
देखो, सुबह आ रही है।

सूर्यदेव की लालिमा भी
क्षितिज का भाल सजा रही है
देखो, सुबह आ रही है।

शीतल, मन्द, सुगन्धित पवन,
मन को सहला रही है
देखो, सुबह आ रही है।

चम्पा, जूही, अमलतास की शाखें,
नर्तन नया दिखा रही हैं
देखो, सुबह आ रही है।

गौरय्या, कोयल भी सरगम,
हरदम नई सुना रही हैं
देखो, सुबह आ रही है।

भोर के स्पन्दन से चितवन भी,
राग मधुर कोई गा रही है
देखो, सुबह आ रही है।

कण-कण में मानो ये,
जीवन नया जगा रही है,
देखो, सुबह आ रही है।

मनुहार

ऐ सखी सूने मन के हेतु
रंग साजन के प्रेम का ले आना
ये फागुन तो बीत गया
आती होली यूं महकाना।
भीगेगी जब चूनर अंगिया
दो नैन चैन से ताकेंगी
रंग भर के झीने आंचल में
देखूं छवि छैले बांके की।
सखी राग-रंग की धूम धाम में
जो प्रिय के सम्मुख जाऊंगी
काल को बांधूंगी पायल से
और ठिठक वहीं रुक जाऊंगी।
विरह की सारी गांठे फिर
मैं इक-इक करके खोलूंगी
पक्के रंग से रंग दूंगी साजन
और आप उसी रंग हो लूंगी।
ऐ सखी, मन के स्वप्न अनोखे
फागुन के कान में कह आना
इस बार तो रीता ही बीता
आती होली यूं महकाना।

भूख

ना देखती है मजहब
ना धर्म का ध्यान रखती है
भूख कहाँ अपना कोई ईमान रखती है।

मिट न जाए जब तक
बेआराम, बेनींद, बेचैन रखती है
ये भूख ही तो है
जो मनुष्य का चरित्र परखती है
बना देती है शिकारी
हर अवसर की आहट पर कान रखती है
भूख कहां अपना कोई ईमान रखती है।

इस भूख से अगर तुम्हारा
वास्ता पड़े कभी
नशे की भूख हो
या भूख का नशा सर चढे कभी
याद रहे संजीवनी संयम और धैर्य की
मानव की आत्म को बलवान रखती है
भूख कहाँ अपना कोई ईमान रखती है।

घर

जाने किस तलाश में हैं, कौनसी डगर में रहते हैं
चैन और सुकून तो जबकि सारे घर में रहते हैं

ख्वाहिशों की लम्बी फ़ेहरिस्त में यूं उलझे हैं हम,
भूल गये चंद अलसाये ख्वाब यहां बिस्तर में रहते हैं,
चैन और सुकून तो जबकि सारे घर में रहते हैं।

बड़ी देर तक हंसता खिलखिलाता है वो उस रोज,
जिस रोज परिंदे सारे उस शज़र में रहते हैं,
चैन और सुकून तो जबकि सारे घर में रहते हैं।

घर खुशबू है, स्वाद है, नींद भी है
छोड़ इसको फिर हम क्यूं सफ़र में रहते हैं
चैन और सुकून तो जबकि सारे घर में रहते हैं।

स्मृतियाँ

समय के अविरल प्रवाह में
प्रचंडता से या सौम्यता से
बह ही जाते हैं सभी क्षण
और क्षणों की
निर्बाध धारा में
बह जाते हैं
अनेक भाव, स्वप्न
कितना भी कसकर
बंद रखो हथेली को
समय खींच ही लेता है उसे
जो नियत नहीं
वहां होने के लिए
समय रंग देता है वर्तमान को
अपने इच्छित रंगों से
मनुष्य की स्वीकार्यता
उपेक्षित रहती है सदैव
किन्तु नियति की
इस रेलपेल में भी
शेष रह ही जाती हैं
स्मृतियाँ,
चोर की गांठ में छिपे
धन के समान
हाँ, कुछ स्मृतियाँ
पक्के रंगों सी अमिट होती हैं।

किस्मत

बात किस्मत की
किस्मत पर
छोड़ देना
बेहतर है,
किताब ए किस्मत को
फिलहाल में ही रखके
उसी पन्ने को
मोड़ देना
बेहतर है,
ना पढिये नसीबों को
जबरन,
ये हकीकत है,
कहां जायेगी,
खुद ब खुद
उभर के आयेगी,
जोर इतना
नजरों पे
किस्मतों के इल्म की ख़ातिर
नहीं है जायज कहीं,
कौन जाने
इन नजरों को आइंदा
ऐनकों के दो शीशे भी
मयस्सर हो के नहीं।

मुहब्बत

मुहब्बत कभी आजाद नहीं होती
और सपने कभी गुलाम नहीं होते
दिल में दर्ज होते हैं यूं ही
उन चेहरों के कोई नाम नहीं होते।

बरते जाते थोड़ी नरमदिली से अगर
वो रिश्ते फिर नाकाम नहीं होते
जिनकी आस में आसमान तकती हैं मासूमियत
क्यूं उन खुशियों के कम दाम नहीं होते।

इश्क़ करने के भी कायदे हैं साहिब
हरम के चर्चे यूं सरेआम नहीं होते
मुहब्बत पर्दे में है मगर आम नहीं
ऐसे खास बाकी लोग तमाम नहीं होते।

एक आंसू बोल पड़ा

नैनों के अर्थहीन रिवाजों से
घुटती दबती आवाजों से
वो आज अचानक खूब लड़ा
आखिर एक आंसू बोल पड़ा।

मन की पीड़ाएं कहने को
अब और नहीं चुप रहने को
वो दुनिया के आगे है खड़ा
आखिर एक आंसू बोल पड़ा।

जो कहता है ,कुछ मत बोलो
तुम बस आदेशों के पीछे हो लो
मैने वो ग्रन्थ ही नहीं पढा
आखिर एक आंसू बोल पड़ा।

तेरी वजह से!

तमाम दुनिया खूबसूरत है
तेरी वजह से
मुझे मुझसे मोहब्बत है,... तेरी वजह से!

तन्हाइयों में भी महफिलों सी
गुलजार है जिंदगी
मुसीबत भी इनायत है,... तेरी वजह से!

रेशमी धागे तेरी आवाज के,
उतरते हैं कानों में जब तलक
दर्द में भी एक राहत है,... तेरी वजह से!

ना मुश्किल है ना फिकरें हैं,
तेरी जानिब जो नजरें हैं
सदा खुशियों से सोहबत है,... तेरी वजह से!

तेरे ख्वाबों ख्यालों में,
मैं गुम हूं अपने हालों में
मिली हर शै से मोहलत है,... तेरी वजह से!

मुझे मुझसे मोहब्बत है,
तेरी वजह से
तमाम दुनिया खूबसूरत है,... तेरी वजह से!

कौन हो तुम?

इन सांसों का आलाप हो तुम
सुख स्वप्न मेरा निष्पाप हो तुम
मुझमें स्पन्दित प्राण हो तुम
प्यासे मन को परित्राण हो तुम।

मैं गाती हौले से,वो गीत हो तुम
श्रृंगार मेरा हो,प्रीत हो तुम
मन में जगता इक भाव हो तुम
मुझमें मेरा दोहराव हो तुम।

घुंघरू की झन झनकार हो तुम
वीणा के कोमल तार हो तुम
संगीत मेरा हो नृत्य हो तुम
जग मिथ्या है बस सत्य हो तुम।

तन में आती जाती हर श्वास हो तुम
एक प्रेम भरा विश्वास हो तुम
तुम लय हो मेरी,मौन हो तुम
कैसे कह दूं कि कौन हो तुम।

पथिक

बाधाएं आभूषण हैं पथ की
तुम उनसे किंचित भी न डरना
पथिक, तुम यह भूल न करना।

सत्य असत्य के पथ में यदि
जीवन दोराहे पर लाए
मिथ्या के लोभ प्रलोभन सारे
यदि ह्रदय तुम्हारा ललचाए
कंटक को करना अंगीकार भले पर
असत्य की राह कदम न धरना
पथिक, तुम यह भूल न करना।

धर्म की राह कष्टमय होगी
होंगे संकट और विपदाएं भी
पल-पल दुःख भी गरजेंगे
छाएंगी घनघोर घटाएं भी
रहना अडिग लक्ष्य पर तुम
कष्टों पर चित्त जरा न धरना
पथिक, तुम यह भूल न करना।

ये भोली लड़कियाँ

ये भोली लड़कियाँ,
जिस्मों के बदले रूह के सौदे कर लेती हैं।

ये भोली लड़कियाँ,
दुआओं के बदले, खताओं से दामन भर लेती हैं।

ये भोली लड़कियाँ,
फूलों सी मसली जाती हैं, पर खुशबू सी बिखर लेती हैं।

ये भोली लड़कियाँ,
इश्क़ नहीं,इश्क़ के दिलासों से सबर कर लेती हैं।

ये भोली लड़कियाँ,
इक मुस्कुराहट के लिए, सिर से पैर तक संवर लेती हैं।

ये भोली लड़कियाँ,
लुट भी जाएं रिश्तों में तो इंतकाम किधर लेती हैं?

हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

सीता, उमा, पांचाली बनकर
युगों युगों से, रीते समाजों के
मिथ्या मानदण्डो से गुजरी हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

मैं क्षमा, दया, ममता की मूरत
अपने ही अधिकारों की खातिर
हर दिन हाशिये पर उतरी हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

मैं जननी, भार्या, तनया
आंगन,
तुलसी बन संवरी हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

दांव खेल में अभिमानो के
तिरस्कार से अपमानो से
बस मैं ही पल-पल बिखरी हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

मैं मनु हूँ, पन्ना हूँ, मीरा हूँ
मैं सुलोचना,
सावित्री हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

इतिहास जरा खंगालो तुम
चाहे काल कोई निकालो तुम
हर पन्ने पर उत्सर्गों की
स्याही बन कर के उभरी हूँ
हाँ, मैं स्त्री हूँ,..!

**हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का**

रचनाकार

भावना विशाल

अंबिकापुर

सरगुजा, छत्तीसगढ़

E mail- vb8146 @gmail.com

Mobile - 9680213565

जिस प्रकार दिन के अलग अलग समय में सूर्य का प्रकाश पाकर समुद्र की अथाह जल राशि भिन्न-भिन्न रंगो को प्रतिबिंबित करती है, ठीक उसी प्रकार जीवन के पृथक-पृथक क्षणों में होने वाले अनुभवों के प्रति हमारे मन में भी कई प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। ये अनुभव निजी भी हो सकते हैं और देखे, सुने या पढ़े हुए भी। ऐसे ही भावों को शब्दों का रूप देने का प्रयास मैंने अपनी इन रचनाओं में किया है।

प्रस्तुत रचनायें एक कविमन के बहुवर्णी मनोभावों का सहज चित्रण है, साथ ही संदेश वाहक भी जिनमें मैंने मानव को प्रकृति द्वारा बार-बार मिल रही चेतावनी को देखते हुए भाव प्रस्तुत किये है।

अन्तरा शब्दशक्ति ने आपातकाल में सृजन को प्रेरित किया है। मेरी इन कविता के सृजन का मूल कारण आपातकाल में पाठक के मन में सकारात्मक भाव का पुनर्जागरण करना है।

आशा है पाठकों को पसंद आएगी। मुझे प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-119-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/